मैथिली प्रतिष्ठा प्रथम पत्र
B.A. PART – I

विद्यापति जन्म दरभंगा जिलान्तर्गत बिस्फी गाँव मे 1368 ई० मे भेलनि। कहल जाइत अछि जे ओ राजा शिवसिंह सँ मात्र दुई वर्ष पैघ छलाह। विद्यापति अपन बाल्यावस्था मे ओ प्रतिभा प्रमाणित कयलन्हि। विद्यापति संस्कृत साहित्यक प्रकाण्ड पंडित छलाह। संस्कृत मे ओ अनेक गोट ग्रन्थक रचना कयलनि मुदा देसक वाणी मे रचना करब ओ श्रेयस्कर बुझलनि —

सक्कय वाणी बहुअ न भावइ
पाउँअ रस को मम्म न पावइ।
देसिल बअना सब जन मिट्ठा
तैं तैसन जम्पओं अवहट्ठा।।

अवहट्ठ भाषा मे कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका नामक दुइ पोथीक ओ रचना कयलनि मुदा ताहि काल मे देशक वाणी मैथिली छल अपभ्रंश नहि, ई जानि ओ मैथिली मे पदक रचना करय लगलाह। हिनक प्रसिद्धिक अधिकांश श्रेय रहल मैथिलीक पदावलीकेँ देल जाइछ। तत्कालीन युग हिनका कतेक उपाधि सँ विभूषित कयल गेल — कविशेखर, अभिनवजयदेव, कवि शिरोमणि, कवि कण्ठहार, सरसकवि खेलन, सुकवि कंठहार, खेलन कवि, महाराज पंडित, कविरत्न, कवि कंठहार तथा कवि रंजन।

हिनक सौन्दर्य वर्णन राधाक वयःसन्धि सँ आरम्भ होइछ —

सैसव जौवन दुहु मिलि गेल
श्रवनक पथ दुहु लोचन लेल।।

विद्यापतिक पदावली मे शृंगारक दुहु पक्षक वर्णन भेल अछि। संयोग शृंगार मे राधा आ कृष्णक केलि विलास वर्णित अछि

NOKIA

Scanned with CamScanner

राधा आगा अति नयाका मई आइछ [illegible]
कवि कुनक आनन्दित चर्चा करैत कहैत छथि

चाँद सार लए धरना कए
लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोय आँचर धनि पोछल
दह दिस भेल उजोरे ॥

राधाक बढ़ैत मादक सौन्दर्य पर कृष्णाक दृष्टि जाइत पड़लनि तँ ओ निर्निमेष दृष्टि देखैत रहि गेलाह —— सजनि आनन सुन्दर रे
भौंह सुरेखहि आँकि
पंकज मधुकर कि मधु पिबि कै
उड़ल पसारल पाँखि

राधाक प्रेम में वियोगक स्थिति सँ नहि बचि सकलीह। राधाक जीवन एक समय कृष्णा बिना [illegible] करय कृष्णा वियोग होइत अछि।

सावन घुमल रातु अम्बर रे
देखल ध्वनि दह।
नव जलधार नव संचर रे
आनि बिजुरि रेह
आबु देखल ध्वनि [illegible] रे
तोहि उपजल मेघ
चन्द्रकला आनि अम्बर रे
नहि मिर अवलम्ब ॥

विरह वर्णन में कविक विलक्षण काव्य प्रतिभाक परिचय भेटैत अछि
लोचन नीर तटनि निरमाने
करय कलामुखी तापे सनाने।

भक्ति पदक रचना जीवनक उत्तरार्द्ध में कवि कयलनि —— शिव, दुर्गा, गंगा [illegible] आदि सँ ओ भक्ति-भावना सँ भरल पदक रचना कयलनि —
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गंगा प्रति कविक श्रद्धा एवं भक्ति उत्कृष्ट रूप में भेटैत अछि —
बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे
छोड़इत निकट नयन बह नीरे
कर जोरि बिनमओं विमल तरंगे
पुनि दरसन होइ पुनमति गंगे ॥